तथा उपयुक्त उत्पादन तकनीक का अभाव है। भविष्य में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र को बढ़ाने के लिए इन चुनौतियों को दूर करने के साथ ही इस विषय पर अधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

6. कटाई के बाद का प्रबंधन और सब्जियों का प्रसंस्करणः सब्जियां कम समय में खराब हो जाती हैं। इसलिए फसल के बाद के नुकसान को कम करने के लिए, उचित प्रबंधन होना चाहिए। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, भविष्य में और अधिक बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता होगी। क्षेत्र से बाजार तक परिवहन के दौरान उपज को उपयुक्त भंडारण की स्थिति देने के लिए कोल्डचेन तकनीक की आवश्यकता होती है। यह उस अवधि के दौरान सब्जियों की गुणवत्ता में गिरावट को कम करता है। कभी–कभी अधिक उत्पादन के कारण, सब्जियों के दाम में गिरावट आ जाती है। इस स्थिति में सब्जियों का प्रसंस्करण कर के उनकी अवधि को बढ़ाया जा सकता है तथा लाभदायक मूल्य पर बेचा जा सकता है।

निष्कर्षः भविष्य में भारत में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में काफी गुंजाइश है। यदि हम इन संभावनाओं को पूरा करने में सफल होते हैं, तो हम भविष्य में आने वाली चुनौतियों को आसानी से पार कर लेंगे और देश के लोगों की भूख और पोषण को पूरा करने में सक्षम होंगे।

– धीरेंद्र कुमार सिंह, विवेक थपलियाल एवं आशीष कुमार सिंह
सब्जी विज्ञान विभाग
गोविन्द बल्लभपंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
पंतनगर, उत्तराखंड

गन्ने की सूखी पत्तियों का पुर्नचक्रणः एक अभिनव प्रयोग

बुरहानपुर निमाड अंचल का एक ऐसा कृषि प्रधान जिला है जहाँ अधिकतम नगदी फसलें जैसे गन्ना, कपास, केला आदि उगायी जाती हैं। यहाँ किसानों को गन्ना क्षेत्रफल के आधार पर चीनी मिल द्वारा अग्रिम भुगतान भी किया जाता है। यही कारण है कि यहाँ गन्ना किसानों के लिए अधिकतम आय की फसल बन गयी है। जिले के अधिकतम कृषकों द्वारा गन्ना कटाई के बाद बचने वाली सूखी पत्तियाँ सामान्यतया जला दी जाती हैं जिससे खेतों की जैव विविधता नष्ट हो जाती है। खेतों की नष्ट हो रही जैव विविधिता के विषय में जब शंकरराव वामनराव चौहान को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया तो वह एक दम भौचक्के रह गये। वह एक मध्यम वर्गीय कृषक हैं जो कि बुरहानपुर की नेपानगर तहसील के ग्राम अंधारवाड़ी में रहते हैं। इस पर श्री चौहान ने के.वी.के. वैज्ञानिकों से पूछा कि क्या करना चाहिये तो वैज्ञानिकों ने बताया कि किसी तरह से गन्ने की बची हुई पत्तियों का पुर्नचक्रण करना ही एक मात्र रास्ता है। यह बात श्री चौहान के दिलो दिमाग में बैठ गई और उन्होंने इस ओर प्रयास करना शुरू कर दिया। उनके प्रयासों को सफलता तब मिली जब उन्हें पता चला कि पंजाब प्रांत में एक ऐसी मशीन है जो गन्ना कटने के बाद बची हुई पत्तियों को चूरा कर पलवार के रूप में विछा देती है और किसानों को पत्तियों में आग नहीं लगानी पड़ती है। श्री चौहान ने इस चमत्कारिक मशीन को 1,90,000/– में खरीदा।

मशीन 50 हार्सपावर के ट्रैक्टर द्वारा चलित तथा 5 घन्टे में एक हेक्टर की पत्ती पलवार में परिवर्तित कर देती है तथा इस दौरान 7–8 लीटर डीजल प्रति घन्टे खपत होती है। मशीन के प्रयोग से गन्ना उत्पादन 16 प्रतिशत एवं शुद्ध आय में 34600 रू की बढोत्तरी के साथ–साथ फसल में खरपतवार कम, मिट्टी की संरचना में सुधार, गन्ना के लिये जल मांग कम, प्रति हेक्टर 4–6 टन कम्पोस्ट की प्राप्ति हुई।

– अजीत सिंह व मोनिका जयसवाल
कृषि विज्ञान केन्द्र
बुरहानपुर, मध्य प्रदेश

पशुपालन से किसानों के जीवन स्तर में सुधार

पशुपालन खेती के साथ–साथ किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। भारत में पिछले कई वर्षों से लगातार उचित दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो रही है जिससे देश दुग्ध उत्पादन में पिछले कई वर्षों से विश्व में प्रथम स्थान पर है। दुग्ध उत्पादन की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में भी वृद्धि हुई है और 300 ग्राम प्रति व्यक्ति दुग्ध उत्पादन उपलब्धता को भी पूरा कर चुका है। वर्ष 2018–19 में देश में लगभग 187.7 मिलियन टन दुग्ध उत्पादन हुआ था और प्रति व्यक्ति दुग्ध उत्पादन भी 394 ग्राम था।

भारत सरकार एवं प्रदेश सरकारों के द्वारा विभिन्न परियोजनाओं को संचालित किया जा रहा है जिसके अंतर्गत उच्चकोटि के वीर्य की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जा रही है जिससे किसानों के पशुओं की औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता भी बढ़ सके एवं पशुओं का आनुवांशिक सुधार भी हो सके। पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय है जो मँझोले एवं सीमान्त किसानों